स्वतंत्रता का विचारक्षेत्र
(Scope of Freedom)

स्वतंत्रता और स्वच्छंदता (Liberty and Licence)

समाज में स्वतंत्रता के सार्थक प्रयोग के लिए यह जरूरी है कि एक व्यक्ति की स्वतंत्रता दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक न बने। यदि सब मनुष्य पूर्ण विवेक से संपन्न (Perfectly rational) हो तो यह मान सकते हैं कि वे केवल वही मार्ग अपनाएंगे जो सबके लिए सर्वोत्तम होगा। अतः वे अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करते समय दूसरों की स्वतंत्रता में तनिक भी बाधा नहीं डालेंगे, परंतु ऐसी स्थिति तो केवल कल्पना की ही वस्तु है। यथार्थ के धरातल पर मनुष्य अपने-अपने विवेक से काम लेकर भी भिन्न-भिन्न ढंग से सोचते हैं।

एक मनुष्य की स्वतंत्रता दूसरे मनुष्य की विवशता बन सकती है। बड़ी मछली छोटी मछली को अपना आहार बनाने की स्वतंत्रता चाहे तो छोटी मछली को प्राणों से हाथ धोने पड़ेंगे ⟶ चूँकि स्वतंत्रता का प्रयोग समाज में ही किया जाता है इसलिए वह तभी ग्राह्य होगी जब वह सबको समान रूप से उपलब्ध हो। यदि तानाशाह की स्वतंत्रता प्रजा पर अत्याचार करने में निहित हो तो प्रजा की स्वतंत्रता नष्ट हो जाएगी। यदि चोर अपनी स्वतंत्रता के नाम पर दूसरे का माल चुरा लेने की खुली छूट चाहे तो इसे स्वतंत्रता कहना एक मजाक होगा। यदि सड़क पर गाड़ी चलाने वाला यह स्वतंत्रता चाहे कि वह जिधर भी चाहे, जितनी रफ्तार से गाड़ी चलाएगा या मोड़ देगा, तो अन्य यात्रियों की स्वतंत्रता ही नहीं छिन जाएगी